classmate
Date
Page

Date
25/7/20

Inter IInd year

Lecture no - 47

Assistant Professor, Marwari college, Darbhanga.

TOPIC कृषक आन्दोलन

भारतीय कृषक आन्दोलनों में सन् 1920-22 के मध्य कीमतों के काम और भू-लगान की दर में वृद्धि के कारण किसान सभा और एका नाम से आन्दोलन की शुरुआत हुई। वहीं सन् 1919 में गुजरात में खेड़ा नामक कृषक आन्दोलन का कारण फसलों की बरबादी के कारण किसानों द्वारा करों और लगान की दर घटाने की माँग करना था। बंगाल और चम्पारण में 1860 और 1917 में किसानों को ब्रिटिश सरकार द्वारा जबरदस्ती नील की खेती करने के लिए बाध्य करने के कारण कृषक आन्दोलन की शुरुआत हुई थी। 1855-56 ई० में बिहार का संथाल आन्दोलन (अब झारखण्ड में), 1836-96 के मोपलाओं का का मालाबार का तेलंगाना आन्दोलन तथा 1930-51 का बंगाल किसानों से कृषक आन्दोलन का पारिश्रमिक अर्थात् श्रम-कार्य के विरोध में हुआ था। न देने के स्वतंत्रता के पश्चात बंधुआ मजदूरी को प्रतिबन्धित किए जाने से पताब मुक्ति संघर्ष, तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा, जैसे आन्दोलन हुए।

भारत में प्रमुख कृषक आन्दोलन

उत्तर प्रदेश के कृषक आन्दोलन

उत्तर प्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है तथा यह सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य है, लेकिन यहाँ के किसानों की स्थिति अत्यन्त दयनीय रही है। सर्वप्रथम सन् 1920 ई० में आगरा और अवध क्षेत्र के कृषकों ने अपनी समस्याओं के लिए आन्दोलन किया था। इस आन्दोलन से प्रभावित होकर 1921-22 में उत्तर प्रदेश में एका कृषक आन्दोलन हुआ। इस अवधि में उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास चौरा-चौरी स्थान में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जमींदार और कृषक सम्मिलित रूप से विरोध कर रहे थे। वहीं एका आन्दोलन के माध्यम से कृषकों ने संगठित होकर बेगार, नजराना, बेदखली, कमीशन-मुक्ता के विरोध में आन्दोलन आरम्भ किया।